सामाजिक रूढ़ियों के विरोधी–

केशव चन्द्रसेन



लेखक:—
श्री सत्यभक्त

युग-निर्माण-योजना-मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सामाजिक रूढ़ियों के विरोधी— केशवचन्द्र सेन



वर्तमान समय में हिन्दू-समाज की निर्बलता के अनेक कारणों में से एक मुख्य कारण उसकी रूढ़िग्रस्तता भी है। यहाँ का शूद्र और ग्रामीण-वर्ग ही नहीं, नगरों के रहने वाले अधिकांश पढ़े-लिखे हिन्दू भी रूढ़ियों को धर्म का एक अङ्ग मानने लगे हैं। यद्यपि उनको यह बात समझायी जाती है कि सभी रूढ़ियाँ समय-समय पर किसी सामयिक आवश्यकतावश आरम्भ की जाती हैं, उनमें समयानुसार परिवर्तन होते रहते हैं और कभी न कभी उनका अन्त भी हो जाता है, तो भी यदि उनसे किसी समय के प्रतिकूल रूढ़ि को त्यागने को कहा जाय तो वे कभी उसके लिये तैयार नहीं होते। वे तुरन्त प्रथा और परंपरा की दुहाई देते हैं। उनकी समझ में यह बात आती ही नहीं कि प्रथायें और परम्परायें व्यक्तियों और समाज की सुविधा के लिये हैं न कि उनको बन्धनों में डालने के लिये। जब परिस्थितियों के बदल जाने से कोई प्रथा हानिकारक सिद्ध होने लगती है तो उसको त्याग या बदल देना ही समझदारों का कर्त्तव्य है।

यद्यपि रूढ़ियों की मान्यता न्यूनाधिक परिणाम में सर्वत्र पाई जाती है, पर खेद से कहना पड़ता है कि भारतवर्ष में और विशेषतः हिन्दू-समाज में उनका जैसा कुप्रभाव देखने में आता है वैसा अन्यत्र नहीं है। इन लोगों ने सती प्रथा जैसी क्रूरता और निर्दयतापूर्ण रूढ़ि को भी राजी-खुशी से नहीं छोड़ा और उसके लिये उनके ऊपर जब राज्य का अत्यधिक दबाव पड़ा और उसके लिये दण्ड दिये जाने का कानून बना दिया गया तब कहीं जाकर वे उससे विरत हुए। पर जहाँ राज्य ने ढोलेपन से काम लिया वहाँ कानून भी निष्क्रिय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो गया । उदाहरण के लिये हमारे सामने बाल-विवाह निरोधक कानून (शारदा एक्ट) है, इसको पास हुए लगभग चालीस वर्ष हो चले, पर अभी तक उसका नाम मात्र को ही पालन किया जाता है । जो लोग अपनी लड़कियों का बड़ी आयु में विवाह करते हैं वे अपनी परिस्थितियों से विवश होकर अथवा सिद्धान्तों की रक्षा के लिये ऐसा करते हैं, कानून का किसी को ख्याल ही नहीं है ।

यही कारण है कि यद्यपि पिछले सौ वर्षों से—कुछ समाज-सुधारक कितनी हानिकारक रूढ़ियों को मिटाने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं, पर उनको नाम मात्र की ही सफलता मिली है । 'विधवा-विवाह' का कानून सौ वर्ष पहले ही पास किया जा चुका है और यहाँ की बहुसंख्यक विधवायें भयङ्कर कष्ट सहन करती भी रहती हैं, पर अभी तक किसी उच्च जाति में इसका खुलकर प्रचार नहीं हुआ । व्यक्तिगत साहस से जो दस-बीस विवाह हो भी जाते हैं उनको भी समाज की—मान्यता नहीं मिलती और ऐसे लोगों को प्रायः बहिष्कृत जैसा जीवन ही बिताना पड़ता है ।

ऐसी दशा में यह आवश्यक है कि ऐसे विद्वान और कर्मवीर व्यक्ति सुधार-क्षेत्र में आवें जो जनता को समझा सकने के साथ ही स्वयम् उन सुधारों पर अमल करके उदाहरण उपस्थित कर सकें । यह एक निर्विवाद सिद्धान्त है कि सामान्य जनता पर उपदेशों का उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना कि कार्य रूप में उदाहरण उपस्थित करने का । जो लोग केवल दूसरों को ही उपदेश देते रहते हैं और स्वयं तदनुकूल आचरण नहीं करते उनके लिये आलोचक गण फौरन 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' की कहावत प्रयुक्त करने लग जाते हैं ।

श्री केशवचन्द्र सेन (जन्म सन् १८३८) में यह विशेषता पर्याप्त मात्रा में पाई जाती थी कि वे जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते थे उनके अनुसार स्वयं आचरण भी करते हैं । यद्यपि इसके परिणाम स्वरूप उनको सदैव अपने घर वालों से संघर्ष करना पड़ा, अनेक साथी, सहकारियों से भी नाता तोड़ लेना पड़ा और जनता में तरह-तरह के अपवाद भी सहन करने पड़े, पर उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिन सुधारों को उचित और आवश्यक समझा उनके अनुसार स्वयं कार्य करने से कभी पैर पीछे नहीं हटाया।

वंश और आरम्भिक जीवन—

श्री केशवचन्द्र सेन का वंश अंग्रेजी शासन के आरम्भ में बिल्कुल साधारण स्थिति का था। उनके परबाबा को इतना कम वेतन मिलता था कि उससे वे अपने कुटुम्ब का ठीक तरह पालन भी नहीं कर सकते थे, उनके बाबा श्रीरामकमल सेन को १० वर्ष की आयु में ही ८ रु० मासिक की कम्पोजीटरी करनी पड़ी। पर वे बड़े उद्योगी थे, और क्रमशः उन्नति करते हुए बङ्गाल बैंक के सेक्रेटरी के पद पर पहुँचकर दो हजार रु० प्रतिमास वेतन पाने लगे। इससे उनके वंश की प्रतिष्ठा और सम्मान बढ़ गया और अपने गाँव में तो वे राजा की तरह माने जाने लगे। पर रामकमल की मृत्यु के बाद फिर धन घटने लग गया और जिस समय केशवचन्द्र ने होश सँभाला उनके घर की अवस्था एक साधारण श्रेणी के धनवान् जैसी रह गई थी।

पर श्रीकेशवचन्द्र ने आगे चलकर जो नाम कमाया उसका कारण उनका किसी बड़े वंश में उत्पन्न होना नहीं था, वरन् परिश्रम करके उच्च शिक्षा प्राप्त की और फिर उसका प्रयोग परोपकार्थ किया यही उनकी विशेषता है, जिसके लिये उनको अब भी याद किया जाता है। जिस जमाने में उन्होंने अंग्रेजी भाषा में विशेष योग्यता प्राप्त की थी वह आधुनिक शिक्षा का आरम्भिक समय ही था। उस समय साधारण अंग्रेजी जानने वाले व्यक्ति भी शीघ्र ही उच्च सरकारी पदों पर पहुँच जाते थे। श्रीकेशवचन्द्र के लिये भी यह मार्ग खुला था। एक बार उनके घर वालों ने उन्हें क्लर्क की नौकरी दिलवा भी दी और एक वर्ष में ही उनकी कार्यक्षमता के आधार पर उनका वेतन दुगुना हो गया। आगे और भी पदोन्नति की आशा थी, क्योंकि इसी बैंक में उनके पितामह श्रीराम-कमल दीवान के पद पर दो हजार रुपया प्रतिमास वेतन पर काम कर चुके थे। पर उनका ध्यान नौकरी की अपेक्षा आध्यात्मिकता और धर्म-प्रचार की तरफ अधिक लगा रहता था। इसलिये उन्होंने थोड़े ही समय बाद इस नौकरी से स्तीफा दे दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनके इस कार्य से घरवाले बड़े नाराज हुए और मित्रों ने भी अनेक प्रकार से समझाया कि "संसार में केवल लेक्चर देने और धार्मिक पुस्तिकाएँ लिखने से काम नहीं चल सकता। जीवन-निर्वाह और घर-गृहस्थी के पालन के लिये धन की आवश्यकता पड़ती ही है। जिसके पास धन नहीं होता उसका सम्मान बाहर वाले तो क्या घर वाले भी करना छोड़ देते हैं। उसको सांसारिक व्यवहारों में पग-पग पर कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं।" इसमें संदेह नहीं कि परिस्थितियों को देखते हुए ये बातें ठीक ही थीं, पर श्रीकेशवचन्द्र ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया, उन्होंने यही निश्चय किया कि चाहे मुझे आगे चलकर आर्थिक कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ें, पर महान् कार्यों के लिये तो तप और त्याग की आवश्यकता पड़ती ही है। इस समय देश में विदेशी शासन के प्रभाव से जो विधर्मीपन की लहर फैल रही है इससे अपने भाइयों को बचाने के लिये किसी विशेष प्रयत्न का किया जाना अत्यावश्यक है। अगर मैं इस कार्य को सिद्ध कर सका तो यह देश और जाति की एक बहुत बड़ी सेवा होगी, जिसके सम्मुख मेरा कुछ आर्थिक असुविधा सहन करना कोई महत्त्व नहीं रखता।

तपस्वी-जीवन—

वास्तव में श्रीकेशवचन्द्र में यह भावना आरम्भ से ही घर कर रही थी। यद्यपि उस समय तक उनका परिवार काफी सम्पन्न और बड़ा समझा जाता था, पर वे सदैव सदाचार और सादगी का जीवन व्यतीत करते थे। उनके बाल्य मित्र और बङ्गाल के प्रसिद्ध नेता श्रीप्रतापचन्द्र मजूमदार ने उनका चरित्र-चित्रण करते हुए लिखा है कि "उन दिनों बङ्गाली लड़कों का जीवन प्रायः दुराचार से परिपूर्ण था। पर केशव बाबू इससे बिल्कुल बचे हुए थे। इसलिये लोग उनको 'साधु' और 'देवता' कहते थे। मैं भी यह कह सकता हूँ कि उनमें गुणों की संख्या बहुत अधिक और दोषों की बहुत कम थी। वे बड़े उदार हृदय भी थे और पाप-कर्मों से पृथक रहने का सदा ध्यान रखते थे। बुरे लड़कों की संगत को वे घृणा की दृष्टि से देखते थे। हमें अच्छी तरह याद है कि बुरे लड़के भी जब कभी उनके पास आते थे तो इस तरह की बातें करते थे कि मानों उनका आचरण बड़ा पवित्र हो।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अठारह वर्ष की आयु में इनका विवाह एक दस वर्ष की लड़की से पुरानी प्रथा के अनुसार कर दिया गया। पर उस समय पूर्ण युवावस्था होने पर भी उन्होंने कई वर्षों तक जैसा त्यागमय जीवन व्यतीत किया उसकी प्रशंसा सभी ने की है। उनका घराना वैष्णव धर्म का अनुयायी था, इसलिये वहाँ बङ्गाल नियमित खाद्य मछली के सिवा और किसी प्रकार का माँस नहीं खाया जाता था। सन् १८५८ में केशव बाबू को शीतला निकल आई। बङ्गाल में जिन लोगों को शीतला निकलती है वे प्राय: कुछ दिनों के लिये मछली छोड़ देते हैं। पर उन्होंने जो मछली खाना छोड़ा तो हमेशा के लिये ही वे शाकाहारी बन गये। पहले वे सारंगी या बेला बजाया करते थे, उसको उन्होंने तोड़ कर फेंक दिया। ताश खेलने की जो आदत थी उसे बिल्कुल बन्द कर दिया। खेल-तमाशों में जाना भी त्याग दिया गया। विवाह के पश्चात् अधिकांश लोग कुछ समय तक तो भोग-विलास का जीवन बिताते ही हैं, पर केशव बाबू उल्टे तपस्वी बन गये। बहुत वर्षों बाद उन्होंने इसकी चर्चा चलने पर कहा था कि "मेरे विवाह के बाद की रातें परमेश्वर के मन्दिर में कठिन तप में व्यतीत हुईं।"

केशव बाबू के इस प्रकार के आचरण के कई कारण थे। यद्यपि उनका विवाह घर के बड़े-बूढ़ों ने परम्परा के अनुसार काफी छोटी लड़की से किया था और उस समय के जातीय-नियमों के अनुसार विवाह के पूर्व केशव बाबू लड़की को देख भी नहीं सकते थे, पर विवाह हो जाने पर उनको इस प्रकार के सम्बन्ध पर बड़ा क्षोभ हुआ। अब उन्होंने यही निश्चय किया कि जब तक उनकी पत्नी समर्थ नहीं हो जाती तब तक वे उसके साथ दाम्पत्य-सम्बन्ध नहीं रखेंगे। यदि इसके प्रायश्चित स्वरूप उन्होंने वैसा कठोर तपस्वी जीवन अपनाया तो यह उनका मानवीय कर्तव्य ही था।

दूसरा कारण सम्भवत: यह भी था कि वे ब्रह्मचर्य के पुराने आदर्श पर विश्वास रखते थे। वे चाहते थे कि शास्त्रीय आदेशानुसार चौबीस वर्ष की आयु तक वीर्य-रक्षा की जाय तो उससे जीवन के विकास और विद्या-बुद्धि की उन्नति में अवश्य ही एक महत्त्वपूर्ण लाभ मिलेगा। कुछ भी हो विवाह के पश्चात् कई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वर्ष तक वे अपनी स्त्री से बिल्कुल पृथक रहे। उस समय का वर्णन करते हुए श्री मजूमदार ने लिखा है—

"विवाह के बाद वस्तुतः कई साल तक केशव बाबू का जीवन एक तपस्वी की तरह बीता। इन वर्षों में उन्होंने अपनी स्त्री का सहवास कभी नहीं किया। हँसी-मजाक की बातें करना तो दूर वे उसके समीप भी शायद ही जाते थे। इस कारण उनके घर वालों को और दूसरों को भी यह विश्वास होने लगा कि केशव का विवाह व्यर्थ ही किया गया। इन दिनों वे बड़े गम्भीर रहते थे और कभी हँसते नहीं थे। उन्होंने कुछ धार्मिक प्रार्थनाएँ बना ली थीं, जिन्हें वे प्रातः और सायंकाल पढ़ा करते थे। वे छोटे-छोटे शिक्षापूर्ण वाक्य कागजों पर लिखा करते थे और उन्हें मार्ग में, निकलने वालों के पढ़ने के लिये चिपका दिया करते थे। इन दिनों वे अपनी और दूसरों की त्रुटियों पर बहुत खयाल किया करते थे। यही समय उनके जीवन में महान् परिवर्तन का था। उसके सम्बन्ध में एक बार उन्होंने स्वयं कहा था—

"जिस घर में मैं रहता था, जिस कमरे में सोता था, वह मेरे लिये एक जङ्गल या कबरिस्तान के समान था। जहाँ कहीं मुझे कोई पाप-कर्म होता दीखता तो उस स्थान को मैं मृत्यु के राक्षस की क्रीड़ा-भूमि मानता था। घर में सब प्रकार के ऐशो-आराम के साधन होते हुए भी, मैं मोटे कपड़े पहिनता था। यद्यपि मैं बहुत रोता नहीं था, पर हँसता तो बिल्कुल ही नहीं था। जब मैं सबेरे सोकर उठता या रात को सोने लगता तो मेरे मन की यही दशा होती थी।"

वे यद्यपि बड़े पढ़ने वाले थे पर प्रेम के उपन्यासों और कविताओं से बड़ी घृणा रखते थे। उन दिनों वे प्रायः एकान्त में रहते थे और किसी के साथ ज्यादा बात-चीत नहीं करते थे। जो थोड़े से रुपये अपने जेबखर्च को लेते थे उन्हें बड़ी किफायतशारी से और सोच-समझकर व्यय करते थे।"

"उस समय वे बहुत पढ़ते थे, पर वे सब पुस्तकें नीतिशास्त्र, ईश-प्रार्थना या अन्य बुद्धि सम्बन्धी विषयों की होती थीं। कविता की केवल दो पुस्तकों को वे पसन्द करते थे—एक यंग साहब की बनाई 'नाइट थॉट्स' और दूसरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शेक्सपीयर का 'हैमलेट' नाटक। ये दोनों ही उनके गम्भीर स्वभाव के अनुकूल थीं। इस प्रकार मेरे मित्र ने अपने जीवन की नींव की स्थापना पवित्र आचरण की पक्की चट्टान पर की।"

इस तपस्या और सदाचारपूर्ण जीवन का फल भी उनको प्राप्त हुआ। बीस वर्ष की आयु में वे दुबले-पतले, रूखे साधू-संन्यासी की तरह जान पड़ते थे। उनकी स्त्री भी उनके इस व्यवहार को देखकर और वास्तविक कारण को न समझकर अत्यन्त दुःखी हो गई थी और प्रायः अपनी मौत मनाया करती थी। पर चालीस बर्ष की अवस्था में वे ही केशव बाबू कैसे हो गये इसका वर्णन भी उपर्युक्त लेखक के मुख से सुनिये—

"इस समय वे ४० वर्ष के हैं। अब वे हृष्ट-पुष्ट, मोटे-ताजे और चिकने हैं। इस समय उनके कितने ही लड़के-लड़कियाँ हैं। उनके मित्र और अनुयायियों की संख्या भी बहुत अधिक है। उनका चेहरा इतना प्रसन्नतापूर्ण है कि मुस्कराहट और तेज उनके चारों ओर छाया रहता है। उन्होंने अपने जीवन को इतना सफलतापूर्ण बनाया है कि प्रत्येक आदमी उनकी आज्ञा को मानता हुआ दीख पड़ता है। वे अपने मित्रों से अत्यन्त प्रेम करते हैं और घण्टों उनके साथ बात-चीत किया करते और हँसा करते हैं। सम्मान और ख्याति ने तो मानो उनसे मित्रता ही कर ली है। परमात्मा से उनकी दैनिक प्रार्थना इतनी आनन्द-प्रद, दीर्घकालीन, प्रसन्नतापूर्ण और शान्तिमय होती है कि उसे देखकर किसी को इस बात की कल्पना भी नहीं हो सकती कि इनका जीवन कभी दुःखपूर्ण रहा होगा। उनकी बाह्य शान्ति, सुन्दर स्वास्थ्य और कलह के अभाव को देख कर यही प्रतीत होता है कि ये बातें उन्हें परमात्मा से प्राप्त हुई हैं। अब चालीस वर्ष की आयु में उनका जीवन आनन्दपूर्ण, धार्मिकता, सन्तोषयुक्त, सफल मनोरथ, भक्ति और सेवा की साक्षात् मूर्ति दीख पड़ता है।"

संसार के मनुष्य किसी सफल मनोरथ और सौभाग्यशाली व्यक्ति के बाहरी रूप को देखकर यह अभिलाषा तो करते हैं कि हम भी ऐसे ही बन जायँ, पर इस बात पर बहुत कम ध्यान देते हैं कि इस स्थिति को प्राप्त करने के लिये पहले उन्होंने कितना त्याग, तपस्या, कष्ट सहन, एकान्तवास आदि का जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यतीत करके अपने आचरण को सुदृढ़ बनाया है ? लोग वृक्ष के पके मधुर फलों को देखते हैं, पर इस पर विचार नहीं करते कि इसको लगाने और वर्षों तक खाद-पानी देकर रक्षा करने में कितना परिश्रम करना पड़ा है। इसी तथ्य को समझाने के लिये लेखक ने अन्त में कहा है—"देश के युवा और वृद्ध पुरुषों से मैं यही कहूँगा कि यदि आप भी केशवचन्द्र सेन की भाँति सुख-शांति प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको उनकी तरह सदाचारी भी बनना पड़ेगा। विनय और प्रसन्नता सदाचारियों को ही प्राप्त होती है। जो आदमी सर्वदा अपने अन्तः-करण की रक्षा करता है, परमात्मा उसी की सहायता करता है।"

सार्वजनिक जीवन में प्रवेश—

श्री केशवचन्द्र को छोटी आयु से ही सभा आदि करने का शौक था। अपने स्कूल जीवन में ही वे तरह-तरह की संस्थाओं और सोसाइटियों का निर्माण किया करते थे, जिनमें वे स्वयं तथा उनके साथी लड़के भाषण और विचार-विमर्श किया करते थे। इससे इन लोगों के आचरण और भावनाओं की उन्नति होती थी। केशव बाबू को इनका संचालन करते-करते आगे चलकर बड़ी संस्थाओं की व्यवस्था करने का अभ्यास हो गया।

अपनी विद्यार्थी अवस्था में ही उन्होंने 'कोलूटोला ईवनिंग स्कूल' की स्थापना की जिसमें वे और उनके कई मित्र आस-पास के लड़कों को निःशुल्क शिक्षा दिया करते थे। केशव बाबू स्वयं अंगरेजी साहित्य पढ़ाते थे। इससे लड़कों की नैतिक शिक्षा पर बहुत ध्यान दिया जाता था। इसके लिये केशव बाबू उनके सामने धार्मिक विषयों पर भाषण भी किया करते थे। उस समय बंगाल के नवयुवकों को शेक्सपियर के नाटकों को प्रभावशाली ढङ्ग से पढ़ सकने की एक धुन लग गई थी। केशव बाबू इस प्रकार पढ़ सकने के साथ उनका अभिनय भी कर सकते थे। एक बार उन्होंने स्वयं ही सब व्यवस्था करके 'हैमलेट' नाटक खेला था, जिसमें हैमलेट का पार्ट केशव बाबू ने ही किया था।

कुछ समय पश्चात् उन्होंने 'सद्भाव भ्रतृ समाज' की स्थापना की जो नवयुवकों में आध्यात्मिकता और धार्मिकता का प्रचार करती थी। यह वही समय था जिस समय १९-२० वर्ष की आयु में केशव बाबू अध्यात्म में लीन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होकर तपस्वी जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके भाषणों से नवयुवकों पर बड़ा प्रभाव पड़ता था और वे भी कुछ करने को तैयार हो जाते थे। इस समाज की स्थापना करने के अवसर पर कुछ मित्रों ने एक कमरे में एकत्रित होकर बारी-बारी से ईश्वर-प्रार्थना की। केशव बाबू की प्रार्थना ऐसी भावपूर्ण थी कि सबकी आँखों में आँसू आ गये।

ब्रह्म-समाज से सम्पर्क—

अब धार्मिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में श्री केशवचन्द्र की जानकारी काफी बढ़ गई थी। पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उनको धर्म के सच्चे स्वरूप और मूलतत्त्वों के सम्बन्ध में ठीक ज्ञान करा सकता। एक दिन उनको अपने एक परिचित व्यक्ति के यहाँ से 'ब्रह्म-धर्म क्या है ?' शीर्षक लेख पढ़ने को मिला। उसके सिद्धान्त उनको अपने विचारों के अनुकूल जान पड़े और वे ब्रह्म-समाज के सदस्य बन गये। यह समाज राजा राममोहन ने नवशिक्षित युवकों की धर्म के प्रति अरुचि होते देखकर स्थापित की थी और इसका उद्देश्य हिन्दू-धर्म को परमार्जित और समयानुकूल रूप में शिक्षित जनता के समक्ष उपस्थित करना था। इस समय इसके अध्यक्ष महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर थे, जो अध्यात्म-ज्ञान के एक उत्कृष्ट ज्ञाता और अभ्यासी थे। श्री केशवचन्द्र को किन विचारों और भावनाओं ने इस समाज की तरफ प्रेरित किया इसका कारण उन्होंने इङ्गलैण्ड में दिये गये एक भाषण में यह बतलाया था—

"अंगरेजी तालीम ने मेरे दिमाग को विचलित कर दिया था और उसे खोखला बनाकर छोड़ दिया था। मैंने मूर्ति-पूजा का परित्याग कर दिया था लेकिन उसके स्थान में किसी अन्य उपासना पद्धति को ग्रहण नहीं किया था। परन्तु बिना किसी निश्चित धर्म को माने हुए कोई मनुष्य इस संसार में जीवित किस तरह रह सकता है ? अंत में परमेश्वर ने कृपा करके अपनी ज्योति दिखलाई। मेरा कोई भी मित्र ऐसा नहीं था, जो मुझे धर्म, परमात्मा और आत्मा के अमरत्व के विषय में कुछ समझा सकता। मैं मूर्ति-पूजा को छोड़कर व्यर्थ के सामाजिक झमेलों में फसता जाता था। दैवी-कृपा से मेरे हृदय में किसी उच्चतर ज्ञान के लिये आकांक्षा उत्पन्न हुई। मुझे इस बात का पता लगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



कि पाप क्या होता है और मैंने अपने हृदय के भीतर पाप की कालिमा देखी। क्या अब इस पाप रूपी रोग का कोई इलाज नहीं था ? क्या मैं अपने जीवन को एक भार समझता हुआ व्यतीत कर सकता ? परमात्मा ने कहा—"नहीं, तेरे लिये इस रोग से मुक्त होने की आशा है।" मैंने ऊपर देखा और मुझे स्पष्टतया परमात्मा की ज्योति दीख पड़ी। मुझे प्रतीत हुआ कि मैं उस अनाथ बच्चे की तरह नहीं हूँ, जिसे उसके माँ-बाप सुनसान जङ्गल में छोड़ गये हों और जो अन्धकार में टटोलता फिरता हो। मुझे अनुभव हुआ कि मुझे सहायता देने के लिये परमात्मा सदैव मेरे निकट रहता है। परमात्मा ने ही अत्यन्त स्पष्ट रूप में मुझे आध्यात्मिक जीवन की कुञ्जी बतलाई।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'वह कुञ्जी थी प्रार्थना की। और प्रार्थना के ही कारण मेरे मानसिक भावों में परिवर्तन हुआ। मैंने प्रातःकाल और सायंकाल के लिये अनेक प्रार्थनाएँ रचीं और नित्यप्रति उनका प्रयोग करने लगा। यद्यपि मैं उन दिनों पृथ्वी के किसी भी धर्म का अनुयायी नहीं था और परमात्मा के गुणों को अच्छी तरह नहीं समझता था, तथापि मैंने स्वयं अपने अनुभव से इस बात को खूब अच्छी तरह जाना कि प्रार्थना में बहुत बड़ी शक्ति है। मुझमें बुद्धि, पवित्रता और प्रेम की उन्नति होने लगी। लेकिन इसके बाद मुझे इस बात की आवश्यकता प्रतीत होने लगी कि कुछ ऐसे मित्रों का साथ होना चाहिये, जोकि मुझे आपत्ति और सन्देह के समय आध्यात्मिक सहायता और शांति दे सकें। इसलिये मैंने अपने निवासस्थान में ही एक छोटा-सा 'भ्रातृ-समाज' स्थापित किया। उसमें मैं अपने मित्रों को दो ही बातों का उपदेश दिया करता था—एक यह कि परमात्मा हमारा पिता है और दूसरी यह कि सब मनुष्य हमारे भाई हैं। कुछ समय बाद मुझे एक पुस्तक द्वारा विदित हुआ कि 'ब्राह्म-धर्म' मेरे हृदय के आन्तरिक विश्वास के अनुकूल है। मेरा सदा से यह विश्वास रहा था कि हमको किसी भी धर्म ग्रन्थ से जो शिक्षा मिलती है उससे कहीं ऊँची वह शिक्षा है, जो स्वयम् परमात्मा हमारे अन्तःकरण में देता है। बस, इस विचार के आते ही मैं ब्रह्म-समाज में सम्मिलित हो गया।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्म-विद्यालय की स्थापना—

ब्रह्म-समाज में श्रीकेशवचन्द्र के सम्मिलित होने से नव-जीवन का संचार हो गया। उसके प्रधान आचार्य देवेन्द्रनाथ ठाकुर आध्यात्मिक साधना के लिये लिये कभी-कभी हिमालय पर जाकर तपस्या किया करते थे जिससे उनको नवीन आध्यात्मिक अनुभव होते रहते थे। वहाँ से लौटकर उन अनुभवों को सुनाकर वे समाज के सदस्यों को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया करते थे जिससे निस्सन्देह सबका साहस और उत्साह बहुत अधिक बढ़ता था। इधर श्री केशवचन्द्र की प्रतिभा और कर्मठता प्रचार और सेवा के नये-नये कार्यक्रम प्रस्तुत करती रहती थी। इन दोनों के मेल से 'ब्राह्म-समाज' के सदस्यों के हृदय उद्दीप्त हो उठे और एक नई शक्ति और नया उत्साह दीख पड़ने लगा। सन् १८५९ में इसके फल से 'ब्राह्म-विद्यालय' की योजना की गई। इस नये स्कूल में महर्षि देवेन्द्रनाथ बङ्गला में और श्री केशवचन्द्र अंगरेजी में उपदेश देने लगे। कुछ ही समय में विश्वविद्यालय के अनेक सुयोग्य छात्रों का ध्यान भी इन उपदेशों की तरफ आकर्षित हुआ और फलस्वरूप वे ब्राह्म-समाज के अधिवेशनों में उपस्थित होने लगे। श्री केशवचन्द्र 'एकेश्वरवाद की फिलासफी' और महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर 'ब्राह्म-समाज के सिद्धान्त' और अध्यात्म पर भाषण किया करते थे। इस स्कूल की वार्षिक परीक्षा हुआ करती थी और उसमें उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को प्रमाण-पत्र दिये जाते थे।

इस स्कूल में फिलासफी (दर्शन) के शिक्षक का कार्य केशव बाबू करते थे। उनकी विद्वत्ता का कुछ अनुमान इस बात से लगता है कि एक बार इस स्कूल की परीक्षा में दिये गये 'दर्शन के प्रश्न-पत्र' को देखकर कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज के एक प्रोफेसर ने कहा था—"जो लड़का इन प्रश्नों का उत्तर सन्तोष-जनक रीति से दे सकता है वह हमारी समझ में कलकत्ता विश्वविद्यालय के एम० ए० क्लास में भर्ती होने लायक है।"

विधवा विवाह-प्रचार—

जिस समय केशव बाबू 'ब्राह्म-समाज' में सम्मिलित हुए थे उस समय देशपूज्य ईश्वरचन्द्र विद्यासागर उस समाज के मन्त्री पद पर कार्य कर रहे थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ समय पश्चात् वे कार्यभार के कारण 'समाज' की सक्रिय सदस्यता से पृथक हो गये। उस समय उन्होंने श्री केशवचन्द्र से कहा—"केशव, मैं तो बुढ़ापे के कारण 'समाज' के सञ्चालन भार से अवकाश ग्रहण कर रहा हूँ, पर एक कार्य का उत्तरदायित्व तुमको सौंपना चाहता हूँ। विधवाओं की दुर्दशा मुझे अब भी व्यथित करती रहती है। तुम उनकी हालत सुधारने का, उनका फिर से विवाह किये जाने का उद्योग करते रहना। नहीं तो उनकी हाय इस भारतभूमि को पनपने न देगी।" केशव बाबू ने विद्यासागर जी के आदेश को विनीत भाव से शिरोधार्य किया और भाषणों तथा नाटकों द्वारा इतना प्रचार किया कि अनेक प्रभावशाली व्यक्ति भी उसके पक्षपाती हो गये।

वास्तव में उस समय विधवाओं की समस्या ने बड़ा दयनीय रूप धारण कर रखा था। समाज के सभी वर्गों में आठ-दस वर्ष की कन्याओं के विवाह आमतौर से किये जाते थे। अनेक अज्ञानी तो दो-दो, तीन-तीन वर्ष की बच्चियों के भी विवाह कर डालते थे। ऐसी लड़कियों में से अनेक दस-बारह वर्ष की आयु में ही 'विधवा' हो जाती थीं और फिर उनको जीवन भर घोर दुर्दशा में रहना पड़ता था। घर और बाहर के लोग उनको 'अभागिनी' बतलाकर तपस्या और अभावग्रस्त कठोर जीवन अपनाने को बाध्य करते थे और जो कोई उसे सहन न कर सकने के कारण किसी प्रकार मार्ग-च्युत हो जाती थी उसे 'कलंकिनी' घोषित करके भयङ्कर रूप से लांछित और प्रताड़ित किया जाता था। इस दुर्बुद्धि और मूढ़ता की जितनी निन्दा की जाय कम है। निस्सन्देह विद्यासागर महोदय का यह कथन सोलह आने सत्य था कि जो समाज निर्दोष कन्याओं की अकारण ही ऐसी दुर्दशा करता है उसका पतन अवश्यम्भावी है। केशवबाबू ने इस तथ्य को हृदय की गहराई तक अनुभव किया और इस 'पाप-कर्म' के उन्मूलन के लिये धुँआधार प्रचार आरम्भ कर दिया।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उस समय एक 'विधवा-विवाह नाटक' की रचना की गई और उसे खेलने का भार केशवबाबू को दिया गया। वे बाल्यावस्था में 'हैमलेट' नाटक खेल चुके थे और अब भी उनकी उपयोगिता में बड़ा विश्वास रखते थे। उनका कहना था कि "मेरी सम्पति में नाटक सर्वसाधारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के मनोरञ्जन की सर्वोत्तम सामग्री ही नहीं है, बल्कि सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिये वे एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन भी है। जिन साधनों से किसी व्यक्ति या समाज की उन्नति हो सकती है, उनमें से एक साधन यह भी है कि समय-समय पर अच्छी बातों से उसका मनोरञ्जन होता रहे, जिससे उसके मन पर से चिन्ताओं का दबाव किसी हद तक दूर हो जाय और कुछ शिक्षण भी प्राप्त हो।"

उस समय जो 'विधवा विवाह नाटक' केशवबाबू के तत्त्वावधान में खेला गया था उसका सारांश यह था कि 'एक हिन्दू-कन्या विधवा हो गई और उसको बलात् अन्तःपुर में बन्द करके रखा गया। इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में पड़ोस के एक युवक ने उससे सम्पर्क स्थापित कर लिया, जिससे वह समाज से बहिष्कृत और तिरस्कृत हो गई। इस नाटक के अन्त में उस विधवा के कष्टों का चित्रण किया गया था और उसी के मुँह से अपने 'पाप' को स्वीकार करते हुए देश-भक्तों और समाज-सेवियों से यह प्रार्थना कराई गई थी कि वे इस कलङ्कपूर्ण प्रथा को जहाँ तक हो शीघ्र मिटाने के लिये उद्यत हो जायें। इस प्रकार हिन्दू-जाति के प्रमुख व्यक्तियों द्वारा कायम रखे हुए इस 'पाप' की घोषणा करते हुए उसने आत्म-हत्या करके अपने जीवन का अन्त कर लिया।

जिस समय सन् १८५९ में यह नाटक खेला गया तो कलकत्ता में बड़ी हलचल उत्पन्न हो गई। सभी वर्गों और श्रेणियों के उच्च हिन्दू नेता इसे देखने को आये। विधवा-विवाह आन्दोलन के मुख्य सञ्चालक श्री ईश्वरचन्द्र विद्या-सागर भी कई बार आये और नाटक को देखने पर उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। नाटक का अन्त ऐसे करुणापूर्ण ढङ्ग से किया गया था कि दर्शकों में से शायद ही कोई ऐसा बचा हो जिसकी आँखें गीली न हो गई हों। इस नाटक का प्रभाव जनता पर बहुत अच्छा पड़ा और जगह-जगह विधवाओं की दुर्दशा के सम्बन्ध में चर्चा होने लग गई।

लङ्का-यात्रा और धर्म-प्रचार--

कुछ महीने बाद महर्षि देवेन्द्रनाथ ने लङ्का-यात्रा का विचार किया और केशवबाबू से भी साथ चलने को कहा। इन्होंने स्वीकृति तो दे दी, पर इस बात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को ये अच्छी तरह समझते थे कि उनके पुराणपंथी घर वाले अपनी राजी से कभी इसकी अनुमति नहीं देंगे। यद्यपि इस समय विदेश-यात्रा के सम्बन्ध में लोगों के विचार बदल गये हैं, पर अब से सौ वर्ष पहले इस सम्बन्ध में समाज के क्या विचार थे ? उनको जानकर बड़ा आश्चर्य होता है। उस समय देशभक्त कवियों के मुख से "त्याग बिलायत गमन कूपमण्डूप बनायो" जैसे उद्‌गार सुनने में आते थे, पर साधारण जनता और विशेषकर 'पंडित-वर्ग' उसे एक बड़ा 'पाप-कर्म' समझते थे। जो लोग विदेश-यात्रा करते थे उनका बड़ी कड़ाई से सामाजिक बहिष्कार किया जाता था। इसलिये केशवबाबू ने यही निश्चय किया कि घर वालों को बिना खबर दिये ही लङ्का-यात्रा की जाय। वे उन दिनों खास घर में रहने के बजाय अधिकांश में पास ही के एक बगीचा में रहा करते थे। जिस दिन उनको यात्रा करनी थी उस दिन घर वालों के नाम उन्होंने एक पत्र इस आशय का लिखा कि "मैं लङ्का जा रहा हूँ।" उसको घर में रखकर वे चुपचाप जहाज पर जा बैठे और रवाना हो गये। उसके पश्चात् जब वह पत्र घर वालों को मिला तो वे बहुत बिगड़े और बुरा-भला कहने लगे, पर उस समय जहाज रवाना हो चुका था, इसलिये कुछ कर सकने में असमर्थ रहे।

लङ्का से लौटकर उन्होंने छोटे छोटे ट्रैक्ट लिखकर नवयुवकों में धर्म-प्रचार का कार्य आरम्भ किया। इन बारह-तेरह ट्रैक्टों का पाठकों पर वांछनीय प्रभाव पड़ा। कितने ही युवकों ने शराब, सिगरेट आदि का त्याग कर दिया, अन्य प्रकार के अनैतिक कार्यों से मुँह मोड़ लिया और धार्मिक नियमों का पालन करने लगे। इन ट्रैक्टों में 'यंग बंगाल, दिस इज फार यू' (युवा बंगाल ! यह तुम्हारे लिये है) विशेष प्रभावोत्पादक था। इसमें उन्होंने सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों को दी जाने वाली धर्म-विहीन शिक्षा के कुपरिणाम दिखलाते हुए कहा—

"इस शिक्षा का कुप्रभाव केवल कुछ व्यक्तियों पर ही नहीं पड़ा है, बल्कि हमारी सामाजिक उन्नति के मार्ग में भी इसने बड़ी बाधा डाल दी है और हमारे देश के लाखों निवासियों की मानसिक, गृह-सम्बन्धी और नैतिक दशा को भयङ्कर बना दिया है। मेरे मित्रो ! इस बात पर विश्वास रखो कि यदि हमारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देश में नवयुवकों की मानसिक उन्नति के साथ उनके हृदय में धार्मिकता का भी विकास होता और यदि हमारे शिक्षित देशवासी अपने को धार्मिक शिक्षा भी देते तो आज देशभक्ति केवल लेक्चरबाजी और लेखों तक ही सीमित न रह जाती। तब हम सब लोग सचमुच ही नित्यप्रति के व्यवहारों में देशभक्ति का प्रयोग करते पाये जाते।"

'ब्राह्म विद्यालय' में केशवबाबू के जो भाषण होते थे उनके कारण वे समस्त बंगाल में एक प्रसिद्ध वक्ता के रूप में प्रसिद्ध हो गये थे। अब बाहर के लोग भी उनसे अपने यहाँ आकर भाषण करने का अनुरोध करने लगे थे। एक बार उन्होंने अपनी व्याख्यान-माला कृष्णनगर में आरम्भ कर दी। वैसे तो यह एक कस्बा ही था, पर बहुत से बङ्गाली और संस्कृत भाषा के विद्वान् वहाँ रहने लगे थे और इससे उसका नाम विद्या की दृष्टि से प्रसिद्ध था। ईसाइयों ने भी वहाँ पर अपना एक बड़ा अड्डा बना रखा था। श्रीकेशवचन्द्र के जोरदार भाषणों से वहाँ के शिक्षित नवयुवकों की भावनायें बदलने लगीं और ईसाई मजहब की बातों के स्थान में वे अपने धर्म को अधिक महत्त्व देने लगे तो ईसाईयों को चिन्ता हुई। उनके मिस्टर डाइसन नाम के पादरी ने भी सार्वजनिक व्याख्यानों का सिलसिला लगाया। इस प्रकार प्रतिद्वन्द्विता का भाव पैदा होने से केशवबाबू पूरी शक्ति से प्रचार-कार्य और ईसाईयों का खण्डन करने लगे। अन्त में विजय उन्हीं की मानी गई और कृष्णनगर के विद्वानों ने उनको बड़े सम्मान के साथ विदा किया।

श्री रामकृष्ण परमहंस और केशवबाबू—

श्री केशवचन्द्र के हृदय में धर्म-तत्त्व को जानने की अभिलाषा वास्तविक रूप में थी और जब कभी वे इसका अवसर पाते थे तो उससे लाभ उठाने की चेष्टा अवश्य करते थे जिस समय वे ब्रह्म समाज में सम्मिलित हुए उसी समय दक्षिणेश्वर में श्रीरामकृष्ण परमहंस का उदय हो रहा था। उनके ज्ञान और भक्ति की कीर्ति कलकत्ता में ही नहीं समस्त बङ्गाल में फैल रही थी और दूर-दूर के व्यक्ति उनके सत्सङ्ग के लिये दक्षिणेश्वर पहुँचते थे। परमहंस जी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समस्त धर्मों के तत्त्व की भली प्रकार जाँच-पड़ताल की थी और स्वयं काली के भक्त होते हुए भी वे प्रत्येक महापुरुष को आदर-सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

श्री केशवचन्द्र के विचार भी इससे मिलते-जुलते थे, इसलिये उन्होंने अपने दो-तीन अनुयायियों को दक्षिणेश्वर भेजा कि वे वहाँ एकाध दिन ठहरकर परमहंस जी के विषय में ठीक-ठीक पता लगावें। उन लोगों ने दो-तीन दिन ठहर कर अपनी बुद्धि के अनुसार परमहंस जी के विषय में कुछ विचार बना लिये उनकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से उनसे कहा—"महाराज! हमको यह अनुभव हुआ है कि आप एक भक्त हैं। पर कभी तो आप 'हरी-हर' का नाम लेते हैं और कभी 'काली'-'काली' कहकर नृत्य करने लगते हैं। ऐसी अंध भावना में रहना कभी लाभदायक नहीं हो सकता। आप कलकत्ता सुप्रसिद्ध आचार्य-प्रवर श्री केशवचन्द्र की शरण में जाइये। इससे आपका उद्धार हो जायगा—आपको मुक्ति-लाभ होगा। पर परमहंस देव को तो किसी फल की आकांक्षा थी नहीं, इससे उन्होंने उन व्यक्तियों की बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया। इससे वे रोष का भाव प्रकट करते हुए चले गये।

जब उन शिष्यों ने दक्षिणेश्वर से लौटकर केशवबाबू को सब समाचार सुनाये तो वे अपने शिष्यों सहित परमहंस देव के पास जा पहुँचे। उनको देखते ही परमहंस देव ने उनके मन की स्थिति जान ली और आरम्भ में ही ब्रह्मशक्ति का वर्णन करना आरम्भ किया। केशवबाबू में एक विशेष गुण यह था कि वे कुतर्की अथवा अविश्वासी नहीं थे। इसलिये सिद्धान्त में भेद होते हुए भी वे परमहंस जी के उपदेश को श्रद्धापूर्वक सुनते रहे। केशवबाबू केवल निराकार ईश्वर को मानते थे और परमहंस देव ने उनको समझाया कि "शक्ति को माने बिना ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति हो ही नहीं सकती। जो लोग ईश्वर को निराकार मानते हैं उनको भी शक्ति को इस कारण मानना पड़ता है कि उसके बिना ईश्वर के गुण (अर्थात् सृष्टि) प्रकट नहीं हो सकती।" उन्होंने यह भी उपदेश दिया कि ईश्वर की मातृ-भाव से उपासना करने से अध्यात्म-मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त होती है।

केशवबाबू पर परमहंस देव के सत्संग का अच्छा प्रभाव पड़ा। एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विद्वान् के मतानुसार उन्होंने ईश्वर-तत्त्व के जानने के लिये वास्तव में अपनी जाति, कुल, मर्यादा और सामाजिक उन्नति का त्याग कर दिया था। उन्होंने ईश्वर-प्रेम-रस की प्राप्ति के लिये अपने को समर्पित कर दिया था। वे हार्दिक लगन से, मन के आवेश से तत्त्वज्ञान की खोज में इधर-उधर फिरते रहते थे। इसका कारण यह था कि निराकार ईश्वर का ध्यान करने से उनका हृदय मरु-भूमि की तरह शुष्क बन रहा था। पर तो भी उनके स्वभाव में सरलता और निष्पक्षता का गुण था। चाहे कैसा भी वाद-विवाद क्यों न हो वे प्रतिपक्षी के विचार को पूरी तरह सुनकर, उस पर विचार करके ही जो कुछ सत्य जान पड़ता उसे ग्रहण करते थे अधिकांश व्यक्ति इस दृष्टि से दुराग्रही होते हैं। वे अपने आचार्य या सम्प्रदाय के सामने कैसे भी श्रेष्ठ विद्वान् की बात सुनना ही नहीं चाहते। केशवबाबू में यह दोष बिल्कुल न था। ब्रह्म-समाज के आचार्य होने पर भी वे परमहंस देव के प्रति पूर्ण निष्ठा और भक्ति-भाव रखते थे और इस कारण परमहंस देव भी उनसे प्रेम रखते थे।

केशवबाबू के सेवा-कार्य—

सन् १८६० में उत्तरी भारत में बहुत बड़ा अकाल पड़ा और लाखों व्यक्ति अन्नाभाव से मरने लगे। अकाल-पीड़ितों की दुःखगाथा सुनकर सबकी सहानुभूति उनके प्रति जागृत हो गई और कलकत्ते के बड़े-बड़े नेता और योरोपियन भी उनकी सहायतार्थ चन्दा इकट्ठा करने लगे। ईसाइयों ने अपने गिरजे में चन्दा किया। समाचार-पत्रों ने जनता से अपील करके बहुत-सा रुपया जमा करके अकाल-सहायक-कमेटी के पास भेजा। ब्रह्म-समाज अभी तक इस प्रकार के सार्वजनिक कार्यों में भाग नहीं लेता था। उसने अपनी कार्यवाही अभी तक ईश्वरोपासना तथा अध्यात्म के प्रचार तक ही सीमित रखी थी। पर केशवबाबू ने विचार किया कि यदि ऐसे अवसर पर हम दीन-दुखियों की कुछ सहायता नहीं कर सकते तो हमारा अध्यात्म किस काम का? उन्होंने अपनी भावना महर्षि देवेन्द्रनाथ के सम्मुख प्रकट की और उनका समर्थन प्राप्त करके जोर-शोर से चन्दा एकत्रित करने के काम में लग गये। इस सेवा-कार्य से 'ब्राह्म-समाज' की सर्वत्र प्रशंसा होने लगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ समय पश्चात् बंगाल में मलेरिया ज्वर का बड़ा प्रकोप रहा। लाखों व्यक्ति ज्वर से पीड़ित होकर मरने लगे। सरकार ने इस विपत्ति को मिटाने का प्रयत्न किया, पर ज्वर का प्रकोप इतना अधिक था कि उससे बहुत थोड़ा काम हो सका। केशवबाबू ने इस अवसर पर भी आगे बढ़कर सहायता कार्यक्रम जारी किया और हजारों निर्धन व्यक्तियों की औषधि और पथ्य द्वारा सहायता की। इससे हजारों व्यक्तियों की प्राणरक्षा हो सकी।

विद्यार्थियों को स्कूली शिक्षा के साथ नैतिक और धार्मिक शिक्षा दिये जाने के भी केशवबाबू बड़े समर्थक थे और सदैव इस दिशा में कुछ न कुछ प्रयत्न करते ही रहते थे। अब प्रभाव बढ़ जाने पर उन्होंने साधनहीन विद्यार्थियों की सहायतार्थ एक कालेज खोलने का विचार किया। पर कालेज खोलने के लिये जितने साधनों तथा रुपये की आवश्यकता थी उतने उपलब्ध न थे तो भी उन्होंने अपने परिश्रम और ईश्वर विश्वास के भरोसे कार्य आरम्भ कर दिया और एक बहुत पुराने मकान को किराये पर लेकर 'कलकत्ता कालेज' की स्थापना कर दी। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने इस कार्य में पर्याप्त आर्थिक सहायता दी फिर भी केशवबाबू को कर्ज लेकर इसका काम चलाना पड़ता था। वे और उनके कई साथी उसमें अवैतनिक शिक्षक का काम करते थे। महर्षि देवेन्द्रनाथ के दो पुत्र और केशवबाबू के छोटे भाई भी उसमें पढ़ते थे। अपनी अन्य शिक्षा-संस्थाओं की तरह इस कालेज में भी वे साधारण पढ़ाई के साथ विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा देने तथा चरित्र को उन्नत बनाने पर विशेष ध्यान देते थे। यद्यपि इसमें अध्यात्म की शिक्षा नहीं दी जाती थी, पर उनका विश्वास था कि आध्यात्मिक प्रकृति वाले शिक्षक विद्यार्थियों के चरित्र-गठन में विशेष रूप से सहायक होते हैं। यह कालेज पाँच-छः वर्ष तक चलता रहा, फिर आर्थिक कठिनाइयों के इसे बन्द कर देना पड़ा। पर इससे केशवबाबू के उत्साह में कोई अन्तर नहीं पड़ा और वे युवकों की शिक्षा के सम्बन्ध में आजीवन किसी न किसी रूप में प्रयत्न करते ही रहे।

अपने शिक्षा और धर्म-सम्बन्धी विचारों का जनता में प्रचार करने के लिये केशवबाबू ने 'इण्डियन मिरर' (भारत-दर्पण) नाम का एक अंगरेजी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाक्षिक-पत्र भी प्रकाशित किया। इस कार्य में बैरिस्टर मनमोहन घोष उनके विशेष रूप से सहायक थे और कप्तान पामर नामक अंगरेज को जो सामयिक पत्रों में लिखने का बड़ा अभ्यासी था, उन्होंने सहायक सम्पादक के रूप में नौकर रख लिया था। इस पत्र का देश में अच्छा प्रचार हुआ और उसने उस युग में जब यहाँ भारतीय समाचार-पत्रों का बहुत अभाव था, जनता में सामाजिक-चेतना फैलाने में अच्छा काम किया।

घर वालों द्वारा बहिष्कार--

जैसा ऊपर बताया जा चुका है श्री केशवचन्द्र के प्रायः सभी घर वाले पुराने विचारों के थे और इनका ब्राह्म-समाज में शामिल होकर प्राचीन रूढ़ियों के विरुद्ध कार्य करना उनको सदैव नापसन्द था। इसके परिणाम स्वरूप परिवार में सदैव थोड़ा-बहुत पारस्परिक विरोध उत्पन्न होता रहता था। कुछ समय बाद केशवबाबू ने जब 'ब्राह्म-बन्धु-सभा' नाम की एक नई संस्था स्थापित करके बंगाल की विवाहिता स्त्रियों में शिक्षा-प्रचार करने का कार्यक्रम बनाया तो यह विरोध विशेष रूप से प्रकट हो गया। वे अपनी स्त्री को एक धार्मिक उत्सव में, जो महर्षि देवेन्द्रनाथ के मकान पर होने वाला था साथ ले जाना चाहते थे, पर घर वाले इसके विरुद्ध थे। वे इसके दो कारण बतलाते थे, एक तो यह कि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के यहाँ हमारी स्त्रियों के आने-जाने का व्यवहार नहीं है और दूसरी बात यह कि देवेन्द्रनाथ वंश नाम का ही ब्राह्मण है। उनके किसी पूर्वज को मुसलमानी शासन-काल में बादशाह के भोजन की गन्ध विवश होकर सूँघनी पड़ी थी। तब से उनका परिवार लोगों की दृष्टि में जाति-च्युत ही बना हुआ है।

केशव बाबू ऐसे दकियानूसी विचारों के कायल न थे। जिस दिन यह उत्सव होने वाला था उस दिन प्रातः होने से पहले ही से उनके बड़े भाई, चचेरे भाई, चाचा सब जग कर तैयार हो गये और घर से बाहर जाने के सब दर्वाजों को बन्द करके उन पर पहरेदार बैठा दिये ताकि वे केशवबाबू को स्त्री के साथ बाहर न निकलने दें। पर ये इस प्रकार किसी के रौब में आने वाले या भयभीत होने वाले कब थे, बस किसी के नाराज होने की परवाह न करके सीधे बड़े फाटक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर पहुँचे और पहरे वालों को डाँटकर फाटक खोल देने को कहा। वे सब इनके निर्भय स्वभाव को जानते थे, इसलिये उन्होंने डरकर तुरन्त फाटक खोल दिया। बाहर आकर उन्होंने एक पालकी किराये पर की और उसमें अपनी स्त्री को बैठाकर देवेन्द्रनाथ ठाकुर के घर चले गये। उसी दिन शाम को उन्हें एक पत्र मिला जिसमें उनके बड़े भाई और चाचा आदि के हस्ताक्षर थे और जिसमें लिखा था—

"अब हमारे घर में तुम्हारे लिये जगह नहीं है। तुमने घर वालों की आज्ञा का उल्लंघन किया है, इसलिये अब जहाँ तुम्हारी राजी हो, जाओ। घर लौटकर न आना।"

पर केशवबाबू इससे भी न घबराये और देवेन्द्रनाथ के घर में ही रहने लगे। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने एक सहयोगी को पत्र लिखते हुए जो विचार प्रकट किये थे उनसे विदित होता है कि केशवबाबू पक्के समाज-सुधारक थे और इसके लिये बड़ी से बड़ी हानि उठाने को भी प्रस्तुत रहते थे। उन्होंने लिखा कि "अपने घर वापिस जाने का मुझे कोई उपाय दीखता नहीं और यदि कोई उपाय हो भी तो मैं वहाँ जाऊँगा नहीं। जब तक स्वाधीन भाव से मैं अपने घर पर नहीं रह सकता तब तक मैं बाहर ही रहूँगा।"

ब्राह्म-समाज में आगे चलकर स्त्रियों की शिक्षा और स्वतन्त्रता का विशेष रूप से प्रचार हो गया। जिसके कारण सङ्कीर्ण मनोवृद्धि वाले उनको 'अंग्रेजी भावापन्न' कहने लगे। पर इस परिवर्तन की नींव में केशवबाबू का महान् स्वार्थ-त्याग छिपा था। वे घर से निकाल दिये गये, उनके बड़े भाई और स्नेहमयी माता ने भी उनसे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया, समस्त जाति में उनकी बड़ी 'बदनामी' होने लगी, उनको पैतृक सम्पत्ति से भी वञ्चित हो जाने की आशङ्का जान पड़ने लगी। इतनी कठिनाइयों और हानियों को सहन करके वे स्त्रियों को स्वाधीनता के कुछ अधिकार दिला सके थे। समाज-सेवा और विशेषतया नवीन समाज-सुधार के मार्ग पर चलने वालों को उनके अन्य जातीय भाई प्रायः यही 'पुरस्कार' दिया करते हैं, यद्यपि बाद वे सब इन्हीं सुधारों से सुख-सुविधा प्राप्त करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महर्षि देवेन्द्रनाथ के घर में कई महीने रहने के पश्चात् केशवबाबू फिर अपने घर के पास एक बगीचे में किराये का एक छोटा कमरा लेकर रहने लगे। इसका एक कारण तो यह था कि उन्होंने अपने चाचा से गृह-सम्पत्ति में से अपने हिस्से की माँग की थी और दूसरा यह कि उनको चिन्ता के कारण गण्ड-माला की भयङ्कर व्याधि हो गई थी। उनकी माता चाहती थीं कि वह कहीं पास रहें तो वह भी उनकी कुछ देख-भाल कर सकें। इस बीमारी में बारह बार उनके फोड़ों की चीर-फाड़ हुई और एक बार तो बीमारी इतनी बढ़ी कि हाथ-पाँव ठण्डे पड़ गये। उनके इस कष्ट-सहन और अपूर्व सहनशीलता से अन्त में घर वालों के भी विचार नर्म हो गये और उन्होंने इनको फिर घर में बुला लिया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पुत्र का जन्म-संस्कार—

कुछ समय पश्चात् श्री केशवचन्द्र के प्रथम पुत्र का जन्म हुआ और उन्होंने विचार किया कि इसका 'जाति-कर्म-संस्कार' ब्राह्म-धर्म के अनुसार किया जाय। पर जब उन्होंने इसका जिक्र अन्य घर वालों से किया तो उन्होंने यही कहा कि "हम लोग कट्टर वैष्णव हैं। यदि तुम हमारे सामने इस बच्चे का संस्कार ब्राह्म-धर्म के अनुसार करोगे तो हमको बहुत दुःख होगा।" पर अब केशवबाबू में पहले से अधिक दृढ़ता आ गई थी। उन्होंने कहा कि "जब घर के सब लोग यहाँ अपने विश्वास के अनुसार समाजिक और धार्मिक रस्में करते रहते हैं तो मैं वैसा क्यों नहीं कर सकता ? आखिर इस घर में मेरा भी समान भाग है।" उन्होंने अपना विचार देवेन्द्रनाथ ठाकुर के सामने रखा और उन्होंने खूब धूमधाम से तैयारी करने की अनुमति दे दी। इस अवसर पर सब 'ब्राह्म' सदस्यों को निमन्त्रण दिया गया। घर को फूल-पत्तों से खूब सजाकर आँगन में एक बहुत बड़ा शामियाना ताना गया और नौबत, नगाड़े, शहनाई की तुमुल ध्वनि होने लगी। इससे घर के पुराण-पन्थियों के कान फटने लगे और वे सब जब तक उत्सव हो तब तक के लिये घर से बाहर चले गये। केवल केशवबाबू की स्त्री और माता रह गईं। 'जाति-कर्म-संस्कार' बड़ी सफलता से सम्पन्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



हुआ और इस घटना से अन्य सभी लोगों को रूढ़ियों को तोड़ने की बहुत अधिक प्रेरणा मिली।

स्वयम् केशवबाबू के सम्बन्धियों पर इसका काफी प्रभाव पड़ा और वे एक-एक करके इनके साथ सहानुभूति प्रकट करने लगे। कुछ समय पश्चात् तो उनमें से अधिकांश एक-एक करके ब्राह्म-समाज में सम्मिलित हो गये। अब केशवबाबू की स्थिति बहुत सुदृढ़ हो गई और वे बड़े उत्साह से 'ब्राह्म-समाज' का कार्य सञ्चालन करने लगे।

पुराने 'ब्राह्म-समाजियों' से मतभेद —

यह लिखा जा चुका है कि श्री केशवचन्द्र पूरे समाज-सुधारक थे और जाति-पाँति के हानिकारक बन्धन, छुआछूत, स्त्रियों का घर में बन्द रहना आदि के विरुद्ध थे। वे और भी अनेक तरह के सुधारों के पक्षपाती थे और भारतीय समाज को ऐसे बुद्धिवादी आधार पर सङ्गठित किये जाने का प्रतिपादन करते थे जिससे वह विदेशियों के सामने सिर ऊँचा करके खड़ा हो सके। उनका कहना था कि हिन्दू-समाज में ये त्रुटियाँ मध्यकाल में ही पैदा हुई हैं, प्राचीन भारत की संस्कृति इससे बहुत ऊँची थी। उन्होंने अपनी विलायत-यात्रा के समय अंग्रेज-महिलाओं की एक सभा में भाषण करते हुए कहा था—

"प्राचीन काल में हिन्दू-समाज जैसा था, वैसा आज नहीं रहा है। उस समय स्त्री-पुरुष एक-साथ मिलते थे, स्त्रियाँ सुशिक्षित होती थीं, वे गणित-शास्त्र में भी निपुण थीं और अपने पतियों से धार्मिक विषयों पर चर्चा करती थीं। उन दिनों कन्याएँ अपने आप ही वर चुनती थीं। पर अब वे दिन नहीं रहे। पुरुष श्रेष्ठ हैं या स्त्रियाँ, इस बहस में दोनों ओर से बहुत कुछ कहा जाता है। पर मेरा कहना कि यह विरोध निरर्थक है, क्योंकि किसी विषय में पुरुष श्रेष्ठ हैं और किसी विषय में स्त्रियाँ। पुरुष और स्त्रियों के मिलकर काम करने से ही समाज की भलाई हो सकती है।"

पर इस प्रकार के विचार ब्राह्म-समाज के अनेक परम्परावादी सदस्यों को नापसन्द थे। वे इस समाज में आध्यात्मिक आदर्श को लेकर ही सम्मिलित हुए थे। सामाजिक बन्धनों को तोड़ने के वे पक्षपाती न थे। महर्षि देवेन्द्रनाथ यद्यपि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तिगत रूप से केशवबाबू से अत्यन्त प्रेम रखते थे, पर समाज-सुधार के विषय में उनका भी मतभेद था। वे प्राचीन शास्त्रों को ही महत्त्व देकर चलना चाहते थे। धीरे-धीरे यह मतभेद बढ़ता गया और अन्त में 'ब्राह्म-समाज' दो दलों में विभक्त हो गया—एक 'आदि ब्रह्म-समाज' और दूसरा 'भारतवर्षीय ब्राह्म-समाज'। पुराने विचारों के सदस्य कहते थे—"जो विप्लवकारी सामाजिक कार्य केशवचन्द्र ने बिना सोचे-विचारे शुरू किए हैं, उनका नतीजा यह होगा कि उनके 'समाज' पर लोगों की सारी श्रद्धा-भक्ति जाती रहेगी, वे उसे जाति-भ्रष्ट समझने लगेंगे और हिन्दू-समाज उनका परित्याग कर देगा।" इसके उत्तर में केशवबाबू कहते थे—" 'आदि ब्राह्म-समाज' को लोग पुराने जमाने की एक निरर्थक, बची-बचाई चीज समझने लगेंगे। बिना आत्मा के जैसे शरीर होता है वैसा ही 'आदि-समाज' हो जायगा।"

पर केशवबाबू वास्तव में उन व्यक्तियों में से नहीं थे जिनको 'नई रोशनी से चकाचौंध' कहा जाता है। वरन् उन्होंने विदेशी संस्कृति के गुण-दोषों को इतनी अच्छी तरह समझ लिया था कि समझदार योरोपियन भी उनके भाषण सुनकर दंग रह जाते थे। उन्होंने एक बार कहा था—"ईसाइयों के विचार ईसामसीह के विचारों से भिन्न हैं। ईसाई मत में कितने ही साम्प्रदायिक फिरके बन गये हैं, जोकि भिन्न-भिन्न ऊपरी बातों को ही मुक्ति-प्राप्ति का साधन समझते हैं।' इस वक्तृता की आलोचना करते हुए इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध पत्र 'स्पेकटेटर' ने लिखा था—

"जिस नरमी और सहानुभूति के साथ मिस्टर सेन ने अंगरेजों के ईसाई-मत के दोष दिखलाये और जैसी उत्साहपूर्ण धारा-प्रवाह भाषा में उन्होंने एक सच्चे आध्यात्मिक-धर्म का चित्र खींचा उसका श्रोतागणों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।"

जिस समय केशवबाबू ने अपना पृथक 'समाज' बना लिया उस समय यद्यपि पुराने विचारों के सदस्यों ने यह कहकर सन्तोष की साँस ली थी कि "हमने इन आधे योरोपियन बने नवयुवकों को अपने यहाँ से पृथक कर ही दिया है। अब हम 'ब्राह्म-समाज' को प्राचीन आर्यों के आदर्शों पर संगठित करेंगे और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसे एक आदर्श हिन्दू समाज बना देंगे।" पर उसी समय केशवबाबू अपने मन में कह रहे थे कि—"मैं अपने प्रारम्भ किये हुए सुधारों को तो जारी रखूंगा, पर अपने समाज को विघटनकारी सामाजिक प्रयोगों में नहीं बहने दूंगा।" वास्तव में केशवबाबू हृदय से भारतीय समाज के हितैषी और उद्धारक थे। वे उसको 'कूप-मण्डूक' बनकर नहीं रहने देना चाहते थे, वरन् उनकी अभिलाषा थी कि वह ऐसा सशक्त और समयानुकूल बन जाय कि संसार की सभी सभ्य जातियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सके। २४ जनवरी, १८६८ को जब उन्होंने अपने 'भारतीय ब्राह्म-समाज' के नये भवन का शिलारोपण-संस्कार किया उस समय उनके उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए कहा—

"ईश्वर न केवल हिन्दुओं का है, न मुसलमानों का और न ईसाइयों का। वह सबका है और सब उसके हैं। अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, ऊँच-नीच सब उसके हैं और इसलिये बराबर हैं। जो कोई उसे पाना चाहेगा, वह पायेगा, पर दूसरों को गिराकर नहीं वरन् अपने को ऊँचा उठाकर। इस मन्दिर के द्वार सबके लिये खुले रहेंगे चाहे वह कोई भी हो।" कहने की आवश्यकता नहीं कि ये बहुत ऊँचे विचार हैं और आज भी हिन्दू-जाति को इन पर मनन करने और तदनुसार आचरण करने की आवश्यकता है। अगर हम छोटे-छोटे जातीय और साम्प्रदायिक भेदभावों को तुच्छ समझकर इस प्रकार के ऐक्य-भाव का परिचय दे सकें तो हिन्दू-समाज की त्रुटियाँ बहुत शीघ्र दूर हो सकती हैं। और वह निकट भविष्य में ही संसार में अपना उच्च पद ग्रहण कर सकती है।

इङ्गलैण्ड में भारतीय आदर्शों का प्रचार—

'ब्राह्म-समाज' की स्थापना बङ्गाल में बङ्गालियों द्वारा हुई थी और श्री केशवचन्द्र के सम्मिलित होने से पहले तक उन्होंने उसे एक प्रान्तीय-समाज ही बना रखा था। पर केशवबाबू का दृष्टिकोण विशाल था। वे ईश्वरीयज्ञान को सार्वदेशिक मानते थे और उसका सन्देश दूर-दूर तक और अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुँचाना अपना धार्मिक कर्त्तव्य मानते थे। वे प्रत्येक वर्ष किसी नवीन स्थान की यात्रा करके वहाँ ब्राह्म-धर्म का प्रचार करते और अपनी समाज की शाखा स्थापित करते थे। इससे सर्वत्र यह समाचार फैलता जाता था कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

केशवबाबू 'ब्राह्म-समाज' के प्रमुख प्रचारक और नेता हैं। सामयिक पत्रों द्वारा ये समाचार योरोप और अमरीका तक भी पहुँच गये थे और इङ्गलैण्ड के एकेश्वरवादी कई वर्षों से उनके साथ पत्र-व्यवहार किया करते थे। उन लोगों ने कई बार इनसे इङ्गलैण्ड आकर प्रचार करने का आग्रह किया था। अन्त में सन् १८७० में उन्होंने इंगलैण्ड यात्रा का निश्चय कर लिया।

इङ्गलैण्ड में श्री केशवचन्द्र का राजसी स्वागत किया गया और भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड लारेंस तथा सुप्रसिद्ध दार्शनिक जान स्टुअर्ट मिल, प्रो० मैक्समूलर जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति उनसे मिलने आये। वे २१ मार्च से १७ सितम्बर तक—लगभग ६ मास विलायत में रहे। इस बीच में उन्होंने ७० सार्वजनिक सभाओं में भाषण किये। यद्यपि वे ईसाई मत के प्रशंसक थे, पर उसकी आलोचना करने में भी नहीं चूकते थे। अपने स्वागत के लिये की गई एक बड़ी सभा के सम्मुख, जिसमें ईसाई मत के भिन्न-भिन्न दस सम्प्रदायों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे उन्होंने कहा—

"मैं अपने सामने इस बड़े प्लेटफार्म पर ईसाई-धर्म के दस सम्प्रदायों के आचार्यों को देखता हूँ। ये लोग भारतवर्ष का सम्मान करने और भारतवर्ष को आत्म-सुधार की ओर उत्साहित करने को एकत्रित हुए हैं। मेरे मित्र ! मैं इस देश में ईसाई-धर्म के सिद्धान्तों को सीखने नहीं आया हूँ, बल्कि यह जानने के लिये आया हूँ कि इङ्गलैण्ड के लोग यथार्थ में ईसाई-जीवन किस तरह पालन करते हैं ? मैं ईसाइयों के परोपकार, आत्मसमर्पण, आत्मत्याग के भावों का मनन करने के लिये ही आया हूँ। क्योंकि मेरा विश्वास है कि आज इङ्गलैण्ड ने संसार में जो महत्ता प्राप्त की है उसका कारण केवल उद्योग-धन्धे और व्यापार ही नहीं हैं, बल्कि एक जीवनदायक धर्म के आत्मत्याग के प्रभाव से ही वह इतना बड़ा बन सका है।"

जब केशवबाबू इङ्गलैण्ड की 'मादक-द्रव्य-निवारिणी सभा' के सामने व्याख्यान देने गये तो उन्होंने 'शराब के व्यापार से भारत को होने वाली हानि' का बड़े स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया। वहाँ के श्रोतागण उनके भाषण से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने खड़े होकर तीन बार करतल ध्वनि की। सैकड़ों स्त्री-पुरुष केशवबाबू से हाथ मिलाने को आगे बढ़ आये जिनसे हाथ मिलाते-मिलाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वे थक गये। जब वे वहाँ से गाड़ी में बैठकर चलने लगे तो कई लोगों ने उसके भीतर मुँह डालकर कहा—'गॉड ब्लैस यू' (भगवान् तुम्हारा कल्याण करे।)

केशवबाबू के प्रचार कार्य और उनके आध्यात्मिक उपदेशों का इंगलैंड में इतना प्रभाव पड़ा कि वहाँ के समाचार-पत्रों में, जो सदैव भारत को एक कुसंस्काराछन्न देश ही बतलाया करते थे, उनकी प्रशंसा में कालम के कालम भर दिये। कई पत्रों में उनकी जीवनी प्रकाशित की गई। एक मासिक-पत्र में उनका परिचय देते हुए लिखा गया कि "उपदेश देते समय प्रशान्त भाव, उत्कृष्ट स्वर, भक्ति का आवेग, ये बातें श्री केशवचन्द्र के गुणों को और भी बढ़ा देती हैं। उनकी अंगरेजी भाषा निर्दोष है, उनके उच्चारण या बोलने के ढङ्ग से यह प्रकट नहीं होता कि यह कोई भारतीय बोल रहा है, वरन् ऐसा मालूम होता है कि कोई अंगरेज ही बोल रहा है। केशवचन्द्र बहुत से ग्रन्थ पढ़कर शास्त्रवेत्ता नहीं बने, वरन् उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार करके आलोक प्राप्त किया है। जिन लोगों का उनसे परिचय हुआ है उनमें से कितने ही यह कहते हैं कि 'जब से हमने केशवचन्द्र सेन को देखा है तभी से हम समझ सके हैं कि ईसामसीह के कथनानुसार 'शिशु बालक की तरह ईश्वर पर निर्भर रहना' किसे कहते हैं।"

विलायत में केशवबाबू ने महारानी विक्टोरिया से भी भेंट की। उस समय अधिकांश शिक्षित भारतीय अंगरेजी राज्य को भारत के लिये हितकारी मानते थे और महारानी विक्टोरिया स्वयं एक बहुत धर्मशीला तथा परोपकारी स्वभाव की स्त्री थीं। इसलिये केशवबाबू उत्सुकतापूर्वक उनसे मिलने को गये। केशवबाबू ने भारतीय प्रथा के अनुसार मस्तक नवाकर महारानी को नमस्कार किया जिसके उत्तर में महारानी ने भी बड़ी सुन्दरता से नमस्कार किया। महारानी ने यह जानकर सन्तोष प्रकट किया कि भारतवर्ष में स्त्री-शिक्षा की वृद्धि हो रही है और अंगरेजी शिक्षा के प्रभाव से भारतीय जनता अनेक क्षेत्रों में उन्नति कर रही है।

श्री केशवचन्द्र पर ईसाइयत का आरोप—

केशवबाबू भाषण के प्रवाह में एक बार ऐसी बातें कह गये जिनसे अनेक व्यक्तियों को उन पर ईसाइयों के पक्षपात का आरोप करने का मौका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिल गया। यह भाषण सन् १८६८ में कलकत्ता के 'मैडिकल कालेज थियेटर' में दिया गया था। इसका विषय था 'जीसस क्राइस्ट, योरोप एण्ड एशिया' (ईसामसीह, योरोप और एशिया) इसमें ईसा के उपदेशों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा—"ईसामसीह का प्रभाव आरम्भ में एक छोटा-सा नाला था, जो आगे चलकर अधिक चौड़ा और गहरा होता गया और अपने तीव्र बहाव के साथ असत्य और मिथ्या विचारों के दुर्जेय किलों तथा शताब्दियों से इकट्ठे हुए कूड़े-कर्कट को बहा ले गया। ईश्वर ने उसको मनुष्य जाति के सुधार और पुनर्जीवन के लिये भेजा था और इसलिये ईश्वर ने उसको शक्ति और बुद्धि भी प्रदान की थी। उसकी कोमलता, नम्रता, मैमने के समान दीनता, सहानुभूति, दया, क्षमा और साथ ही सचाई के प्रति दृढ़ और अटल निष्ठा प्रशंसनीय थी।"

अन्त में उन्होंने कहा—"क्या ईसामसीह एशिया का नहीं था ? मुझे हर्ष है, नहीं-नहीं अभिमान है कि मैं भी एशिया का हूँ। वस्तुतः ईसाई-धर्म को एशिया वालों ने एशिया में स्थापित और उन्नत किया जब मैं यह विचार करता हूँ तो ईसा के लिये मेरा प्रेम सौ गुना हो जाता है।"

इस व्याख्यान के कारण केशवबाबू की चर्चा चारों ओर होने लग गई। उनके ईसाई दोस्त तो समझने लगे कि बस अब किला फतह होने वाला है। उधर 'आदि ब्रह्म-समाज' वालों ने अपनी बुद्धि को सराहा कि "हमने समय रहते जो केशवबाबू का बहिष्कार कर दिया यह बड़ा अच्छा हुआ, अन्यथा न जाने वह 'ब्राह्म-समाज' को किस रसातल तक ले जाता।"

इस विषय में केशवबाबू जल्दबाजी में कुछ भूल कर गये। बात यह थी कि उनमें भावुकता बहुत अधिक थी और बुद्धि की तेजी भी इतनी अधिक थी कि अनेक बार उसको नियन्त्रण में रखना कठिन हो जाता था। यह व्याख्यान उसी का नमूना था। वे बिना परिणाम का विचार किये हुए ईसा की प्रशंसा में इतना अधिक कह गये कि जनता के मन में सन्देह उत्पन्न होने लगा। वे वास्तव में न तो स्वयं ईसाई होना चाहते थे और न अपने अनुयायियों को उसकी ओर प्रेरित करना चाहते थे। इसलिये उन्होंने इस गलतफहमी को दूर करने के लिये कलकत्ता टाउन हाल में एक और व्याख्यान "ग्रेट मैन" (महापुरुष) के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विषय में दिया। उसमें उन्होंने यह विवेचन करते हुए कि ईश्वर अपना प्रकाश मनुष्य जाति के प्रति तीन प्रकार से प्रकट करता है, कहा—

"महापुरुषों का पद साधारण मनुष्यों से कहीं ऊँचा होता है। यह बात सच है कि वे भी मनुष्य ही होते हैं। लेकिन इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि वे साधारण मनुष्यों से अनेक प्रकार से भिन्न भी होते हैं। सब महापुरुषों में यह विशेषता अवश्य होती है। उनमें मानुषी और दैवी, लौकिक और स्वर्गीय प्रकृति का अद्‌भुत सम्मिलन होता है। किसी महापुरुष को पहिचान लेना सरल होता है, पर उसके गुणों को ठीक-ठीक समझना बहुत कठिन है।"

पर इस भाषण से भी उस गलती का पूरा निराकरण न हो सका। ईसाई लोग कहने लगे कि "केशवबाबू हिन्दुओं से डर गये। इसलिये पहले भाषण में इन्होंने जो पद अकेले ईसामसीह को दिया था, वह इस दूसरे भाषण में अन्य महापुरुषों को भी दे दिया।" पर फिर इस विषय पर केशवबाबू ने कुछ नहीं कहा। इस घटना से यह प्रकट होता है कि सार्वजनिक जीवन में प्रविष्ट व्यक्ति को सिद्धान्त सम्बन्धी प्रत्येक बात सोच-समझकर ही मुँह से निकालनी चाहिये। क्योंकि विरोधी पक्ष वाले जरा-सा भी मौका पाकर बात का बतंगड़ बना देते हैं और जिनका कोई स्वार्थ पूरा होता है वे भी उसको अपने पक्ष में खींचने की कोशिश करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि ईसा एक ऐसे महापुरुष थे जिनके जीवन से करोड़ों व्यक्तियों को सदा प्रेरणा मिलती रही है, वे वास्तव में क्षमा और परोपकार की मूर्ति थे, पर उस समय भारतवर्ष में ईसाई धर्मोपदेशक अपने स्वार्थ की दृष्टि से जिस प्रकार प्रचार कर रहे थे और मौका पाकर तरह-तरह की चालाकियों से हिन्दुओं को ईसाई बनाने का प्रयत्न करते रहते थे, उससे जनता का मनोभाव ईसा के प्रति भी दूषित हो गया था। केशवबाबू ने चाहे सरल भाव से ही ईसा की प्रशंसा की हो, परन्तु लोगों ने उसका अर्थ कुछ और ही निकाला जिससे एक हानिकारक परिस्थिति उत्पन्न हो गई।

पर इस घटना का एक लाभजनक परिणाम भी निकला। ईसामसीह विषयक भाषण से भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड लारेंस का ध्यान भी केशवबाबू की तरफ आकर्षित हुआ और उन्होंने स्वयं उनको बुलाकर भेंट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की। इसके फल से केशव बाबू का प्रभाव सरकारी क्षेत्र में बढ़ गया और उसका उपयोग करके वे 'ब्राह्म विवाह बिल' को पास करा सके। इसके पास हो जाने से दो भिन्न जातीय युवक-युवती अपने को ब्राह्म कहकर विवाह कर सकते थे। पहले इस प्रकार का विवाह देश में प्रचलित 'हिन्दू-ला' की दृष्टि से गैरकानूनी (अवैध) माना जाता था, पर 'ब्राह्म विवाह कानून' के बन जाने पर यह कठिनाई दूर हो गई और बहुसंख्यक लोगों ने इसके अनुसार विवाह किया।

गुरुडम का विरोध—

धर्म-प्रचार के कार्य में अनेक विघ्न-बाधाओं को सहन करने के कारण केशवबाबू के हृदय में भक्ति-भाव का उदय हुआ। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने 'जीवन वेद' ग्रन्थ में लिखा है कि "इस जीवन में पहले भक्ति नहीं थी, प्रेम के भाव भी अधिक नहीं थे और अनुराग भी थोड़ा था। लेकिन विश्वास था, विवेक था और वैराग्य था। ये तीनों ही गुण अत्यन्त लाभदायक और अत्युत्तम हैं, लेकिन ये तीनों ही 'शुष्क' है। तो फिर इस प्रकार का 'शुष्क-जीवन' भक्ति के जल से किस प्रकार प्लावित हुआ ? ईश्वर की कृपा से ही अन्त में मेरे हृदय में भक्ति का सञ्चार हुआ। जब भक्ति बढ़ने लगी तो उसे स्थायी करने के लिये मुझे योग की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस प्रकार भक्ति और योग दोनों की ही ओर मेरा हृदय आकर्षित हुआ।"

भक्ति-भाव का उदय होने से केशवबाबू का ध्यान सङ्कीर्तन की तरफ गया। पहले इसका प्रचार वैष्णवों में विशेष रूप से था, पर फिर यह प्रथा कम पड़ गई और कुछ छोटी जातियों के व्यक्तियों में ही इसका प्रचलन रह गया। केशव बाबू ने सबसे पहले इसे पुनर्जीवित किया। अपने 'ब्राह्म-समाज' के शिला-न्यास के अवसर पर उन्होंने बड़ी धूमधाम से कीर्तन का आयोजन किया। बाद में सभी समाजों ने, यहाँ तक कि देशी ईसाइयों ने भी इसका अनुकरण किया।

इस मार्ग पर चलते हुए मनुष्य बहुत जल्दी भटक जाता है। भक्तगण भावना प्रधान होते हैं और उसके आवेश में वे तुरन्त अपने आराध्य में अलौकिकता का आरोप करने लग जाते हैं। यही बात 'ब्राह्म-समाज' में भी हुई। भक्ति के प्रभाव से पहले तो सैकड़ों नर-नारी इससे प्रभावित होकर अपने जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को शुद्ध और प्रेममय बनाने लगे, पर फिर श्री केशवचन्द्र को 'भगवान्', 'स्वामी' 'त्राता' कहकर पूजने लगे। वे इस प्रकार की मनोवृत्ति के विरुद्ध थे। उन्होंने इस सम्बन्ध में अपने अनुयायियों से स्पष्ट कह दिया—

"स्वतन्त्रता को ही मैंने अपने सम्प्रदाय का नेता बनाया है। इसी कारण जो व्यक्ति मेरे साथी हैं, उन्हें मैं मित्र के नाम से पुकारता हूँ। मैं कभी अपने को गुरु या मास्टर नहीं कहता। स्वतन्त्रता की ही जय होगी, सत्य की ही विजय होगी। जब स्वतन्त्रता आने के लिये आदेश देती है तो जो आना चाहें वे आयें। गुरुडम तो बिल्कुल ही न होना चाहिये।"

केशव बाबू की समाज-सेवा—

राजा राममोहन राय और केशवचन्द्र सेन के समय में हिन्दू जाति अन्ध परम्पराओं में कितनी अधिक जकड़ी हुई थी और इसके कारण लाखों हिन्दू किस प्रकार पहले मुसलमानों और फिर ईसाइयों में सम्मिलित होकर अपनी जाति की जड़ काटने लगे थे, इसकी एक बड़ी लम्बी और दुःखद कहानी है। इतने पर भी यदि कोई माई का लाल स्वार्थ त्यागकर जन-साधारण को समयानुकूल मार्ग दिखाने को तत्पर होता तो लोग उसे सहायता देने के बजाय उसका सिर फोड़ने को तैयार होते थे। ऐसी विपरीत स्थिति में केशव बाबू ने कठिनाइयों और कष्टों की परवाह न करके समाज-सेवा के जिस मार्ग को अपनाया उसके लिये वे चिरकाल तक भारतीय-जनता के श्रद्धा के पात्र बने रहेंगे। नीचे उन कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है जो अपने जीवन की थोड़ी-सी अवधि में उन्होंने आरम्भ किये या पूरे करके दिखाये—

१—एकेश्वरवाद का प्रचार—भारतीय ऋषियों ने कठोर तपस्या करके धर्म के इस गहन तत्त्व को प्राप्त किया था कि इस संसार के उत्पादक केवल एक निराकार—निर्गुण परब्रह्म ही है और उसी की आराधना करने से हम आत्मोत्थान में समर्थ हो सकते हैं। पर फिर लोग इसको भूलकर सैकड़ों प्रकार के देव-देवियों को पूजने लगे और उनके नाम पर आये दिन लड़ाई-झगड़े भी खड़े करने लगे। केशवबाबू ने वेद और उपनिषदों में प्रचारित एक परमात्मा की आराधना का बहुत अधिक प्रचार किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

२—जाति-पाँति के कारण हिन्दू-समाज में जो फूट का भाव बढ़ रहा था, उसे केशव बाबू ने यथाशक्ति कम करने की चेष्टा की। उन्होंने लोगों को समझाया कि जब हम सब एक ही ईश्वर की सन्तान हैं तो एक-दूसरे को छोटा अथवा पृथक समझना कहाँ की बुद्धिमानी है ?

३—स्त्री-शिक्षा के प्रचार के लिये उन्होंने बहुत अधिक प्रयत्न किया, क्योंकि इसके बिना देशोन्नति की आशा नहीं की जा सकती।

४—बाल-विवाह तथा बहु विवाह की कुरीतियों को मिटाने के लिये उन्होंने हर तरह से बड़ा प्रयत्न किया।

५—उस समय स्कूल और कालेजों के शिक्षक प्रायः अँगरेज थे जो भारतीय संस्कृति को बहुत नीचा बतलाते थे। उनके उपदेशों से वनयुवकों में गुरुजनों की उपेक्षा, मद्यपान, गोमाँस भक्षण जैसे दोष घर करते जाते थे। केशव बाबू ने नई शिक्षा संस्थायें खोलकर और उनमें छात्रों को भारतीय सदाचार की शिक्षा देकर उन्हें कुमार्ग में जाने से रोका।

६—उन्होंने लोगों को समाज-सेवा की प्रेरणा दी और नवयुवकों को समझाया कि सङ्कटग्रस्त और असहाय लोगों की सहायता आत्मत्यागपूर्वक करने में ही मानव-जन्म की सार्थकता है।

७—धार्मिक सहिष्णुता और सभी महापुरुषों के प्रति आदर की भावना की शिक्षा दी, जिससे हम सब धर्मों में प्रचलित श्रेष्ठ बातों से लाभ उठा सकें।

इस प्रकार केशव बाबू अपने जीवन के अन्तिम समय (८ जनवरी १८८४) तक अपने विचारों और समय की परिस्थितियों के अनुसार धर्म और सत्य के प्रचार में संलग्न रहे। उन्होंने सबसे बड़ा पुण्य-कार्य हिन्दुओं में से जाति-पाँति और साम्प्रदायिक कट्टरता को कम करने का किया, जिसके कारण इसमें फूट फैलती रहती थी और विधर्मियों तथा विदेशियों को उस पर सफलतापूर्वक आक्रमण करने का मौका मिलता था। यद्यपि हमारे धर्म-ग्रन्थों में मनुष्य मात्र को एक ही परमपिता परमेश्वर की सन्तान कहा गया है और सबके भीतर उसी के अंशरूप जीवात्मा का अस्तित्व बतलाया गया है, पर हम लोग व्यवहार में उस सिद्धान्त से इतना विपरीत आचरण करते हैं कि उसे देखकर अत्यन्त आश्चर्य और दुःख भी होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हिन्दू-धर्म आत्म-ज्ञान का सबसे बड़ा ज्ञाता और प्रचारक माना गया है, पर उसके अनुयायियों में जितना पार्थक्य, ऊँच-नीच का भाव, छुआछूत और दूसरों को नीच तथा घृणित समझने की प्रवृत्ति पाई जाती है, वैसी शायद संसार की किसी हद दर्जे की अज्ञानी जाति में भी नहीं पाई जा सकती। भारतवर्ष के सन्तपुरुष जैसे नानक, कबीर, नामदेव, तुकाराम, दादूदयाल, रामकृष्ण परमहंस, दयानन्द, विवेकानन्द आदि बहुत समय से इस जाति-पाँति रूपी हिन्दू-जाति के घुन को दूर करने की चेष्टा करते आये हैं। श्री केशवचन्द्र ने भी इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया। यद्यपि 'ब्राह्म-समाज' की स्थापना बहुत कुछ इसी उद्देश्य से की गई थी, पर अपने बहुसंख्यक भाई-बन्धुओं के विरोध के कारण वे लोग इस कार्य को अग्रसर करने में भयभीत होते रहते थे। श्री केशवचन्द्र ने निर्भीक भाव से इस क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया और अनेक प्रकार के लोकोपवाद सहन करके भी सैकड़ों कुसंस्कारों की जड़ पर कुठाराघात किया और जाति-पाँति की हानिकारक भावना को एक जोरदार धक्का लगाया। आज सौ वर्ष बीत जाने पर यद्यपि हम उनके कामों को बहुत कुछ भूल गये हैं, पर इसमें सन्देह नहीं कि मुसलमानी शासन के पश्चात् आरम्भ होने वाले नये युग में समाज-सुधार आन्दोलन के प्रथम मार्ग-दर्शक राजा राममोहन राय और श्रीकेशव चन्द्र सेन ही थे। उसके पश्चात् उत्तर भारत तथा बम्बई प्रांत आदि में जितने सुधार-आन्दोलन चले वे अवश्य ही उनके आभारी हैं। उस समय हिन्दू-समाज के घोर निद्रामग्न होने के कारण केशव बाबू को विदेशियों से भी सहायता लेकर अपना काम अग्रसर करना पड़ा, जिससे अनेक छिद्रान्वेषी उनके निन्दक बन गये, पर उन्होंने इस तरफ ध्यान न देकर अपनी समस्त शक्ति हिन्दू-समाज के जागृत करने में ही लगाई जिसका सत्परिणाम आज हम समाजोत्थान तथा जागरण के एक नवीन पर्व के रूप में देख रहे हैं।

मुद्रक—वृन्दावन शर्मा, जनजागरण प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इस लिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग निर्माण योजना द्वारा विचार–क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक–'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

आवरण पृष्ठ–कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org